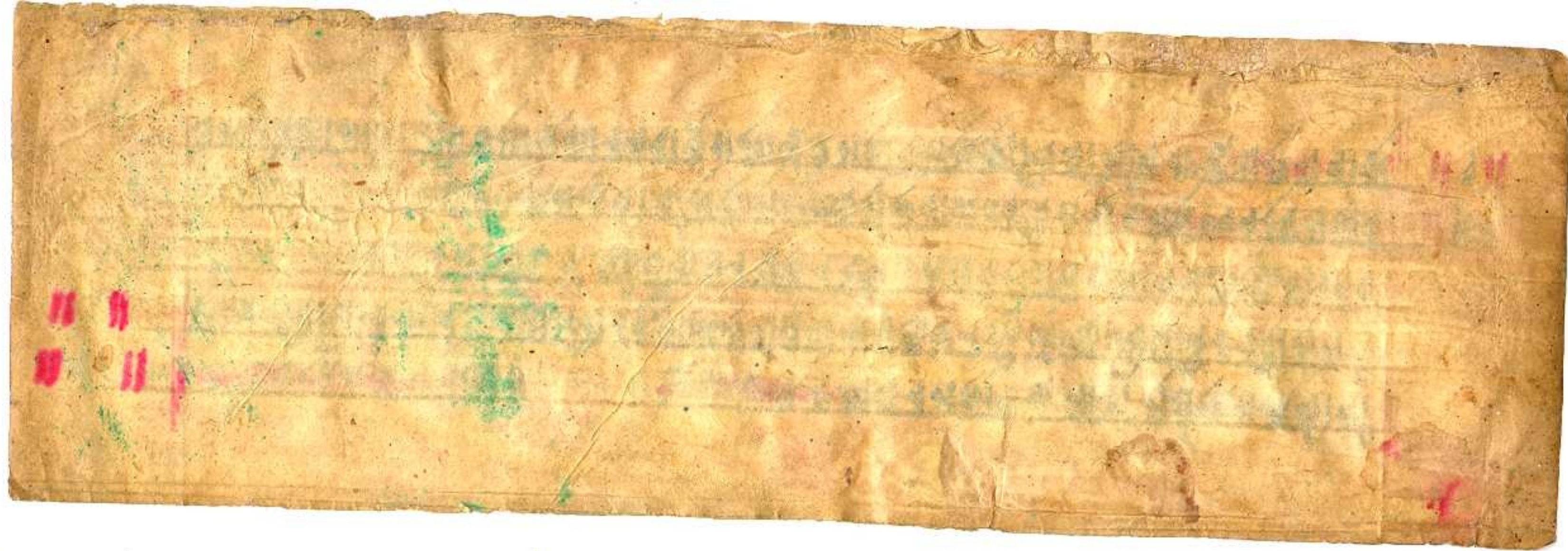




॥ रुक् ॥

॥ १ ॥

॥ ॐ नमो रुक्मजय ॥

॥ अथ रुक्मजयमहात्म्यं ॥ सर्वरुक्मिणीनां

साधनविधिविस्तृतं प्रवक्ष्यामि ॥ ॐ ह्यारुगवन्महावज्रध्वजं लोकधिपतिं नदीसंगम
मगानैव कवचं देवायकनं श्रीवज्रध्वजं ॥ ॐ ह्यवमादिस्त्वानवसाधयं रुक्मिणीं देव
सिध्यन्ति यदि न सिध्यन्ति रुक्मिणीनां सकल (ग) यस्तैरुवाच ॥ ॐ ह्यवमादिस्त्वानवसाधयं रुक्मिणीं देव
वस्य श्रीकांक्षाधिपतिं ॥ साधु २ महादेवस्य साधनमिति ॥ अथ रुक्मजयमहात्म्यं ॥

॥ मन ॥

॥ १ ॥

॥ सर्वरुक्ममावधानं नृपदं लायकं स्म ॥ ॐ वज्रकालं हन २ सर्वरुक्मान् हे रुक्म ॥ अथ रुक्मजयमहात्म्यं ॥
मार्गं ॥ श्रीवज्रध्वजं नाम कृपादर्पकं वज्रकालावलिप्तं ॥ ॐ ह्यवमादिस्त्वानवसाधयं रुक्मिणीं देव
नाधि (ग) धिगान्यरुक्मं सर्वदेवता ॥ ॐ वज्रकालं हन २ सर्वरुक्मान् हे रुक्म ॥ अथ
सर्वरुक्मगणसंवि (ग) धिमाह ॥ साधु २ श्रीवज्रध्वजं महाकांक्षाधिपतिं पश्चिमकालप-
श्चिमसमयं सर्वरुक्मरुक्मिणीनां यहं कवीति ॥ अथ रुक्मजयमहात्म्यं ॥

三

112

वनीविहानाकस्यधीमकुंलायकस्म॥ॐवजायुधसन्नतवस्मिन्॥अथस्मिन्लायिकमार्ग
धश्रीवज्रधननामिकाक४महापवनमृकसंजीवनीतिश्चानयकिस्म॥अथनिश्चनिकमा
यें॥सर्वरुकरुकिनीनां४वीमप्रविभाकिप्रविष्टुनारुं॥सर्वरुकरुकिन्यस्त्रनिकमूल्काप
यिभुंमहारुयनथनथनायमाना४पनिगायकगवन्पनिगायकसूगक४रुगवाह
पययु॥अथपनाजिकामहारुनाधिपकिस्मिन्महापर्वमधुल्लउल्कायपादोभिनसा

॥ मन् ॥

11211

हिवन्दित्वा रगवर्कं महाकाधमधिपतिः ४ श्रीविशुवनविजयीपनिजाचरु रगवन्पनिजा
यत्तु सुगणः ॥ ॥ रगवान्वाच ॥ प्रणिपद्य श्वरुर्कं मनूय्याधमं सर्वजन्मुदीपकम
ब्रह्मसिद्धिमाप्नुह्य ददामि जन्मुदीपकमनूय्याधमं नसायमसिद्धिं इव्यमावाग्धं सर्व
ददामि किं ॥ हिन दध सर्वं मुक्तावेकुर्यपग्रनागसूर्यकान्तवन्दकान्तवन्दुगन्धदियूका
मीकलीकनददामि ॥ अथ काधजापिनी च न का रविष्यामि ॥ उपस्कापिका रवामि ॥ सर्व

11 12

51 531

॥ रुद्र ॥

॥ ३ ॥

नथागमजापिनां नत्वं वस्तुगन्धधूपपुष्पाद्युपकनक्षैः सर्वद्रव्या विद्यामानि दत्तामि नाजरुयै
भक्त्यै विषयैः सर्वान्निदानयामि यान् सर्वद्रव्यास्तविद्यामनदत्तामीति ॥ रुद्रगवानाह ॥ रुद्रा
अपनाजिनामहारुद्रं ध्वजसंस्थं कृहि मूर्ध्नि ॥ ४ ॥ आनन्द ॥ ४ ॥ लपापकानिर्धामृषावाप्त
दिनानां मवर्धमानं सिद्धिददति सिद्धिं न प्रयच्छति ॥ विद्याधवीरुमिनीनागिनीयक्रिधी ॥ लरुकि
का अस्त्रीकिन्नरी महानगी गन्ती पिशाची गन्धर्वी धातुदहकः ॥ प्रमिहककाधवर्जधाम्

॥ मन्

॥ ३ ॥

र्क्षादीं स्नानयामि ॥ अक्षौचमहानवकपातयामि ॥ अथ सर्वकथागमो नवमा ॥ १ ॥ धूम्रमहाकरुपा
धिसूरुषिनामिहमनुष्याधीहिनाथा यराषकमहावाधिसत्त्वा ॥ प्रमिहकसिद्धिरीर्यवलपनाज
मस्त्वै सर्वं हनुमस्तुक्तस्य धातुकमहानाजस्य सर्वस्य चातुमहादीपलाकधातुसाध
नस्य धर्मचक्रप्रवर्तिनस्य सर्वद्रव्यविनाशिनस्य नानाविधिविस्तृतसाधस्य मद्रामक्तुपदानिमहा
काधनाजरुद्रगवानामहाकाधधिपति ॥ १ ॥ अथ श्रीवक्रध्वजमहाकाधधिपति ॥ पूनच

न २

॥५॥

रुमप्रतिकृपिकारुवामागमनिन्दिकारुवामा। रुमवान्महाकाधवज्रधमूर्द्धाक्षीस्नानयक्त
प्रधविधीर्यमवर्धणीधुमवरुवन्॥ अथमहानचक्रपविरुवामा। अथचक्रपाणिमहावाधिस
त्वशर्वाणवसादवकन्यकानागिनीयक्रिधीनीसाधुकाचमदाह॥ साधु॥ अथनसादवकन्यका
नागिनीयक्रिधीपश्चिमकालपश्चिमसमयमनुष्यानीगमगुकोधजापिनीमुपस्कापि
कारुगमरूति॥

॥ अथमहाकरुणाकारिकांरुनाजानाऽपनाजिनप्रहृतिरिहस्व

॥म॥

॥५॥

॥५॥

यं पर्वदमधुलमधुनात्कायधीवज्रधनमहाकाधधिपकृपादोषिनसर्वान्दि
त्वास्वस्वदयमनुदं॥ ओं श्रीरुद्रकुलसुन्दरीय ह्रीं श्रीविजयसुन्दरी॥ ओं श्री
विमलसुन्दरी॥ ओं श्रीविसुन्दरी॥ ओं श्रीमनाहसुन्दनिधि॥ ओं श्रीरुद्रसुन्द
विन्नी॥ ओं श्रीधनसुन्दनिम॥ ओं श्रीवज्रसुन्दनिमी॥ ओं श्रीमहाकरुणा
॥ श्रीमदवज्रकीर्तिनामिनि॥ अथमहाधनविधानैरुवमिपठितमाहुः सर्वसिद्धिददामि

॥ रुग ॥

॥ उ ॥

॥ श्रीवक्रवचनामाज्ञानधमाश्रयसर्वरुगरुहिनीनीर्किं कनीरुवति ॥ रुगवानाह ॥ यदिस्म
र्थलर्यमलनीर्माश्रयसर्वरुगरुहिनीसकुलगात्रविनाशयामि ॥ अथापवक्रिणाव
माह ॥ महादेवसमयनमिष्टामसर्वलोकिकमकुमुदाविधाननसिद्धिददाम ॥ श्रीवक्रव
जापमाश्रयसर्वसिद्धिददामरुहि ॥ यदिनदास्याम ॥ सकुलगात्रविनाशकारुवामसर्वरुथ ॥
गगनासनसमयरे ऊंकारुवाम ॥ रुगवाक्राधवकथमूर्धनस्त्रावयकीचुमवमव

॥ मव ॥

॥ उ ॥

धी ॥ अष्टमहानवकप्रतिष्ठावाम ॥

॥ अथागर्शवक्रामिसाधनमथाक्रम ॥

नदीकुलधमभानवावक्रपाशिग्रहमथ ॥ रुगरुहि ॥ सर्वसिद्धिनिनाकुसंक्षय ॥ अष्टम
हारुगवाक्राधमधन ॥ अथमूर्धापवक्रामिष्टारुहिनीसाधननगामरुगनदरुमूर्ध्नि
त्वामधमाकुप्रसावय ॥ श्रीवाक्रुर्जनीमूडाउरुमाकुलसाधनी ॥ अननान्यमूर्ध्नि
मूर्जनीकुप्रसावय ॥ सिद्धारुगरुहि ॥ नमस्तुते श्रीआत्मसमयपालिनी ॥ वामरुग

॥ रुम ॥

॥ ७ ॥

नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
लिनी ॥ ३ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
धीमूडा सिद्धि रुमानुसा विधी ॥ ४ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
नाव द्रुमनाव द्रुमसर्व रुमिनी वर्ष कवी मूडा ॥ ४ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
कानुपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा ॥ ५ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा

॥ मय ॥

॥ ७ ॥

सिद्धि रुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
आकन्यकानुपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
पृथक्पृथक् देविर्द्विह रूतं देविर्द्विह कान्यसि ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
वृरुमिनी समय मूडा ॥ ५ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
रुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा ॥ ५ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा

॥६॥ ४ समय सम नि काम नि ॥ ~~अननका धस हि न ना क व्यज प न~~ ॥ ~~अंक क क क मुं जीं ४~~ अ म क र नि
 ॥८॥ नी क र ट ॥ ~~अननका धस हि न ना क व्यज प न~~ ॥ अ प र क न ४ श्री ध मा ग क नि ॥ य दि ना ग क नि म र्दि
 स्त र नि अ व्य नि मि य न वा ॥ ॥ ~~अथ सा ध नं र व नि~~ ॥ न दी र्ग मं ग त्वा च न्द ने म ध
 ल कं कृ त्वा पु ष्य प्र क र टुं द त्वा गु र्गु नू ध र्प द ह द क स ह स अ प ति शो र व नि ॥ पु न ध्वा शो र
 ह मा हं अ प ति य मा न मा क नि ॥ आ ग मा या ध न्द ना द के ना र्घी द य ४ का म प्र द रा र्था र व

॥ म न ॥
 ॥ ८ ॥

नि ॥ स र्व र्थ प ल क र्थ क्ष य न व पि ष्य ग्ध प्र ण व ग क नि ॥ न र्व दि न दि मा सा द य नि अ र्थ न व
 नि य र्ग ति च नि ॥ ॥ ~~अथ सा ध नं र व नि~~ ॥ न दी र्ग मं ग त्वा च न्द ने म ध
 ल कं कृ त्वा पु ष्य प्र क र टुं द त्वा गु र्गु नू ध र्प द ह द क स ह स अ प ति शो र व नि ॥ पु न ध्वा शो र
 ह मा हं अ प ति य मा न मा क नि ॥ आ ग मा या ध न्द ना द के ना र्घी द य ४ का म प्र द रा र्था र व

॥ ११ ॥
 ॥ ११ ॥

॥ ५५ ॥

दिशुन प्रयच्छति ॥

॥ श्रीनरुधनगुणगत्वाचन्दननमस्तु लैर्वा कृत्वा कचवीचपू

॥ ५६ ॥

र्षदद्यात् गुग्गुनधूपनधूपयत् अक्षसहस्रं जपत् सिद्धारुवति ॥ पुनर्वा श्रीमहस्रं जपत्
पत्नियर्गमागच्छति ॥ आगमया ४ कुसुमासनवकव्यम् ॥ आगच्छति वकव्यम् ॥ राग्या
रुवस्वति ॥ दिव्यचरनसायनानि सिद्धिद्वयानि ददाति ॥ सर्वथा कुतः शानयति पृष्ट
मानाप्पस्वर्गमविलयति ॥ दशवर्षसहस्राणि जीवयति ॥ यदि नृपे वगत्वाचन्दनन

॥ मच ॥

॥ ५६ ॥

मस्तु लैर्वा कृत्वा ॥ ५५ ॥ नगन्ध ॥ ५५ ॥ नपुष्पनस हनु चकधूपादय ४ अक्षसहस्रं जपत् सिद्धारुवति
॥ पुनर्वा श्रीमहस्रं जपत् पत्नियर्गमागच्छति ॥ आगमया ४ कुसुमासनवकव्यम् ॥ आगच्छति वकव्यम् ॥ राग्या
रुवस्वति ॥ दिव्यचरनसायनानि सिद्धिद्वयानि ददाति ॥ सर्वथा कुतः शानयति पृष्ट
मानाप्पस्वर्गमविलयति ॥ दशवर्षसहस्राणि जीवयति ॥ यदि नृपे वगत्वाचन्दनन

॥ ८८ ॥ गणेशकामयि नम्यराय्यारुवति ॥ दिनदिन दीनानां कैः सुखं ददाति ॥ पृथुमानाप्यमत्र
॥ ९० ॥ मपिनयति ॥ पुनत्रपि वाञ्छं ददाता जक त्याम्बानीय ददाति ॥ पंचवर्षसहस्रादि जीवति ॥
यदाश्रियं नवाजकुलजायते ॥ ॥ नदीसंगमगत्वामासाह नक्षत्रविविधपुष्पैः
शालग्रामपुष्पैः नक्षत्रपुष्पैः नक्षत्रपुष्पैः नक्षत्रपुष्पैः नक्षत्रपुष्पैः नक्षत्रपुष्पैः
त्वाद्यं प्रदीपं प्रजाल्य सहस्रं जपेत् ॥ पंचवर्षं नयिष्यति वाचं दत्तं महाप्रदं ॥

मन ॥
॥ ९० ॥

नागकृति ॥ आगच्छ चरुणा वनकामयि नम्यराय्यारुवति ॥ यदिपि निहर्षं कवा मिहं विनश्यति
दिनदि पृथुमानाप्यस्वर्गमपिनयति ॥ पुनत्रपि वाञ्छं ददाति ॥ पंचवर्षसहस्रादि जी
वति ॥ ॥ नदीकुलगत्यार्कं कृमनमधुलकं कृत्वा श्रुगुनधूपनधूपयदसहस्रं जप
सिद्धारुवति ॥ पुनवाञ्छं ददाता प्रजाल्य सहस्रं जपत्स्वयमेवा गच्छति महाप्रदं सत्कारं
कृत्वा ॥ आगच्छायाध्वना दकं नार्था दयश्चुष्टारुवति ॥ वत्सर्कं मया कर्तुमिति वाचं ददा

धूपन ३

॥ रुक् ॥ नि साधकेन वक्तुं यमाह रुक्स्विति ॥ माह रुक्स्विति पालयति ॥ पंचाह ए निवानस्य कुलं रुक्स्विति पवि
 ॥ १९ ॥ वस्त्रादिप्रतिदिने ददाति ॥ दशवर्षं मरुग्राहि जीवति यदा मृत्युं वा म्रशकुल जायते ॥
 ॥ नदीसंगमगत्वा उदाची वलिपूजा कृत्वा घृतप्रदीपं प्रजाल्य सकल बाधे उप
 रुगाहं वासि समये रुक्मिणी महाकर्मप्रदा वं कृत्वा गच्छति ॥ वत्सर्किं मया कर्म बाधितिवद
 ति साधकेन वक्तुं यनाशं म दही मीसा नाशं ददाति ॥ दिवा नदी नानी वसुवर्धन लक्ष्मी

॥ मन् ॥
 ॥ १९ ॥

दति ॥ दशवर्षं मरुग्राहि जीवति यदा मृत्युं वा सर्वरुक्मिका चाजाजायते ॥ रुक्मिण्युक्ता
 मवक्तुं नाजं रुक्मिणा कल्पे प्रथमं दद्यात् ॥ ॥ अथ मन्वान प्रवर्धनी महा
 रुक्मिणी उक्ता यत्नगवर्धनी वरुध नस्य पादोष्णि वसी वन्दित्वा स्वस्वद्वयं म ददात् ॥
 ॥ १९ ॥ ॥ अथ मन्वान प्रवर्धनी महा रुक्मिणी उक्ता यत्नगवर्धनी वरुध नस्य पादोष्णि वसी वन्दित्वा स्वस्वद्वयं म ददात् ॥
 हनश्च २ आर्जुन मथ रुक्मिणी महा नोद मन्वान प्रवर्धनी आगच्छ श्री धृष्ट रुक्मिणी

॥ रुद्र ॥

॥ १३ ॥

मलाचनी सर्वय करुय कीरी धावग रुहा की सा धक कि माहापय कि स्ता हा ॥ विकट मुखी ज ॥ ॐ
धुधावकर्ग पिष्ठा विनी कर २ धूर्न २ म हासून प्रजिग किन्द २ हिन्द २ महाकर्म पिष्ठा विनी हा
हासा धक कि क नामि की ३ है २ रुद्र २ स्ता हा ॥ धुधावा दु ॥ ॐ धुनि २ तव २ वा द २ जन्म य २ भा
हय २ विद्युत्क चालि प्रजि रुद्र वल सिद्धि दायि क ३ है स्ता हा ॥ विद्युत्क चालि ॥ ॐ धुमूक
स्य मुखी आकर्षय २ सर्व रुद्रानां जय २ हा हा म हा सा धक कि रु २ समय मनुपाल यसा धु २ हा

॥ मव ॥

॥ १३ ॥

हा कि माहापय कि लि २ स्ता हा ॥ धुमूक मुखी २ ॥ रुद्र य रुद्र म हा न प्रव क्षिनी म कु २ ॥
जुधा नाम हा रुद्र म हा न प्रव क्षिनी मू डाल रु ही व्याख्या स्याम ॥ जन्मान्म मूर्ध्नि कृत्वा नर्क नी छय प्र
माच य रु ॥ रुद्रिनी सम य मू डा ॥ जस्ये व मू ड या आ वा हुर्न कृ यो रु मू क्षो म हा रुद्र म हा प्रव क्षिनी
कर्म पिष्ठा विनी मू डा रु व मि ॥ वाम रुद्र मूर्ध्नि कृत्वा नर्क नी रु प्र क्षा न य रु ॥ यान मुखी मू डा ॥ १
॥ जन्मान्म मूर्ध्नि कृत्वा क नि रु छय व रुद्र नर्क नी छय प्र सार्य व रुद्र रुद्र नि या रु य रु ॥ रुद्र

॥ हग ॥

कनालिमुडा २ ॥ कामहस्तमुष्टिं कृत्वा मध्यमास्तु प्रसा नयत ॥ गङ्गा मूर्खी मुडा ३ अस्या ४
 वमुडया मध्यमास्तु नामनामिकां प्रसा नयत ॥ कामहस्तमुडा ४ अस्या ५ वडया अनामिकां प्रवक्ष्य
 कनिष्ठास्तु प्रसा नयत ॥ विकट मूर्खी मुडा ५ ॥ दक्षिण कर मुष्टिं कृत्वा गङ्गा नी प्रसा नयत
 ॥ धुधारी मुडा ६ ॥ अस्या ७ वमुडया गङ्गा नी कृत्वा मध्यमां प्रवर्त्तय ॥ विद्युत्कनाली मुडा
 ८ ॥ दक्षिण हस्त मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठां प्रसा नय ॥ मीन मूर्खी मुडा ९ ॥ हस्त हस्त हस्त नय

॥ मन ॥

॥ १४ ॥

र्यनिवाशिनी रुग्णिनी मुडालज्ज विधिविस्तन गच्छ ४ ॥ ॥ अथागारु गज मन गच्छ
 नाऊ अष्टो महात्मन प्रवक्षिनी साधनं व्याख्यास्याम ४ ॥ दनिजा भाहिगार्थयवटी सा
 धन मूल मे ४ ॥ अथागारु गज मन गच्छ ४ ॥ वा कृणारु वणि ॥ गज साधन मान रुग्णा
 ४ ॥ अथागारु गज मन गच्छ ४ ॥ गज साधन मान रुग्णा ४ ॥ गज साधन मान रुग्णा ४ ॥
 वक्षिनी धी घुमा गच्छ ४ ॥ किं कनामी गिवदनि ॥ साधक नवकाव्य किं की नीरु वस्वनि ॥ जयवा

॥ रुग् ॥ टिकायां कृषिकर्माधिकनानि ॥ दिनदिनं वाचमकंददागि ॥ ~~नाडी~~ जयवाटिकां गत्वा मत्समा
॥ १५ ॥ स्वलिंदापयन् ॥ ~~एकविंशति~~ वाचान्यनिर्जपश्रुत्वा कानि पिठानि सर्वकर्मधिकनानि ॥
 ॥ ~~नाडी~~ ४५ ॥ नैगत्वा श्रुत्वा सहस्रं जपन् कर्मपिठानि नीरुग्निनीधीर्धौ सोम्यनुप
 षागच्छन्तिकिंकनामीति वदन्ति ॥ साधकं न वेक्यं किंकनीरुवस्वगि ॥ गृहकर्म क्रियावाकर्म
 दिकनानि ॥ ॥ ~~नाडी~~ ४५ ॥ नैगत्वा श्रुत्वा सहस्रं जपन् रुग् ४ कर्मपिठानि नीरुग्निनीस

॥ मन ॥

॥ १५ ॥

पवित्राने ४ पवित्रगाक्षीघ्रमागच्छन्ति ॥ आगताया ४ समन्तारविगात्रकवनिदशानुष्ट
 रुवन्ति ॥ च गिकर्माधिकनानि वस्तुयुग्दीनानामकैरुक्ता लक्षणादि आत्मनेव ४ मस्यपरी
 नंददागि ॥ याजनसहस्रं गत्वा दिव्यश्रुत्यमानीय ददागि ॥ सैजपधत्तं गिवयाजिर्गसर्वक
 र्माधिकनादि ॥ ~~गुणिक~~ ४ ५ ॥ नैगत्वा श्रुत्वा सहस्रं जपन् रुग् ४ कर्मपिठानि नीरुग्निनीसाधनविधिविरुत्तन
 नुदिगीय ४ ॥ ॥ ~~गुणिक~~ ४ ५ ॥ नैगत्वा श्रुत्वा सहस्रं जपन् रुग् ४ कर्मपिठानि नीरुग्निनीउत्कायगस्मिन्पर्यन्त

५

॥ १८१ ॥ धुनधीमहादेवाधिपगं ४ पादो भिनसावन्दि ॥ ॥ त्वा म ह द यं म दा न ॥ ॐ हूं २ रुद्र स्वा
॥ १८२ ॥ हा ॥ म न का ष्ठा य धी ॥ ॐ रुद्रा न हूं रुद्र स्वा हा ॥ म हा का ष्ठा य धी २ ॥ ॐ हूं २ रुद्र स्वा हा
 ॥ नो ड का ष्ठा य नी ३ ॥ ॐ रुद्रा यं क नी भू इ हा सि नी सा क ध प्रि य म हा वि चि त्र नृ प न त्वा क नि
 स्र व धु ह स्त य म नी क न नी स र्व इ श व प्र ष म नि ॐ ॐ ॐ ॐ हूं हूं हूं हूं धी घं सि धिं प्र य क्त्वा हूं ४ ज
 स्वा हा ॥ व धु का ष्ठा य नी म हा क न ध्व नी ४ ॥ ॐ य म नि क न नी भू का ल मृ त्यु ना भि नी ख ज्ञ

॥ म न ॥
॥ १८१ ॥

वि ष्णु न ह स्त धी घं सि धिं द हि म सा ध क मा ष्ठा प य नि त्थ ४ स्वा हा ॥ रुद्र का ष्ठा य नी ५ ॥ ॐ हूं
 म क्त्वा धु लि नि र्य क ४ द्वा ल ४ स र्व रु द्र ग रु मि नी दि व्य म हा क्त्वा धु ली रु पि न म थ २ नि रु द्र ग वा ना
 ष्ठा प य नि ४ स्वा हा ॥ रुद्र का ष्ठा य नी ३ ॥ ॐ रुद्रा यं क नी भू इ हा सि नी सा क ध प्रि य म हा वि चि त्र नृ प न त्वा क नि
 स्र व धु ह स्त य म नी क न नी स र्व इ श व प्र ष म नि ॐ ॐ ॐ ॐ हूं हूं हूं हूं धी घं सि धिं प्र य क्त्वा हूं ४ ज
 स्वा हा ॥ व धु का ष्ठा य नी म हा क न ध्व नी ४ ॥ ॐ य म नि क न नी भू का ल मृ त्यु ना भि नी ख ज्ञ

४ रुग ॥

॥ १० ॥

रुगकोशमालाविश्विनीनृपुनश्चरुनश्चविश्वमिश्रमिश्रसाधकप्रियदीश्वराहा॥
रुगकाश्यायनीट॥ ~~रुगकाश्यायनीविद्यापठिममोर्ध्वमिद्विगि॥~~ ॥ अथानाप
नमनहस्यागिनहस्यरुगतामनमहानकुनाऊं अथोकाश्यायनीमृडा लज्जध्वारव्यासा
म॥ ~~अथानाप~~ लिमवक्षानर्कनीप्रसार्यकेशयण॥ ~~मलकाश्यायनीमृडा १ ॥ अथानाप~~ ॥ मन ॥
कनिर्गकृत्वागर्कधीद्वयकृर्कनी॥ ~~महोकाश्यायनीमृडा २ ॥ अथानाप~~ ॥ १० ॥

माकुलिमुखसंगताकनिष्ठाप्रवक्ष्यसर्वरुगिनीमानदकुलनाशनसाधप्रियकुलरुगव
गि॥ ~~नीडकाश्यायनीमृडा ३ ॥ अथानाप~~ मृडयाधीषेसिद्धिरुगिनी॥ ~~मृडपृथक्~~
थकुगर्कनीप्रसानयण॥ ~~रुडकाश्यायनीमृडा ४ ॥ अथानाप~~ पुपुष्येदीपमत्समानसवलिन
गथा॥ ~~तापयसर्वरुगिन्प ४ व~~ गिरुवमिगता॥ ~~उरुमृडीदृष्टा~~ कर्पाकृर्कनीद्वयव
ष्टयण॥ ~~रुगिनीवन्धक~~ कुलकाश्यायनीमृडा ५ ॥ ~~नथेवा~~ किमृडा नीचधुकाश्यायनी

॥ रुग ॥ महासर्वरुगिनी साधन मूडा ३ ॥ ~~गामरुग~~ मुखे कृत्वा प्रसाध्य गङ्गी नी सर्वरुगिनी साधने
॥ १८ ॥ डावनी याग ॥ ~~गङ्गी मूडा~~ कलन य साधनी जय मुखी काश्यायनी मूडा १ ॥ ~~सर्वरुग~~ वरुगिनी
 जय काश्यायनी मूडा ॥ अन्धान्य मुखे कृत्वा कनिष्ठा द्वय वक्ष्ये ॥ प्रसाध्य गङ्गी न्य भुञ्जी
 कृच्छ्र अस्म गङ्गीनी ॥ जैलाया कर्षणी मूडा सनू ड उरु साधनी ॥ किपुन ड ड रुगिनी नी समर्प
 देव साधनी ॥ रुकाश्यायनी मूडा श्री धृ सिद्धि ४ प्रदाय कार ॥ ~~रुग~~ रुग गवान्महा की ४

मच
 १८

धिपति ४ रुगि रुग डामन महा गनु नाज अश्व महा काश्यायनी मूडा ल ३ ध विधिविस्तन
 गनु ४ ॥ ॥ ~~अश्व~~ अश्व नमन स्या गिन रु स्य रुग डामन महा गनु नाज अश्व रुग काश्या
 यनी साधनं चारव्या स्याम ॥ ~~रुग~~ रुग सर्व रुग गि महा काश्यायनी साधने रुगिनी ॥ ४ मरुगाने
 ला अश्व गगाया ४ कपोल नू धिन स पू र्धु म घादि य ४ रुग रुगिनी वेत्स कि म या कर्त्तव्य
 ॥ साधक न व कृ र्वा मा गारु व र्धि गि ॥ मा गारु व त्प गि पाल य गि धने गि ना र्थ द द गि ॥ सर्व सि

॥ रुग् ॥ पतिपुत्रयमिमहाधनपतिरुवमिः पंचवर्षक्षानिजीवयन्नियंदासृयन्नाजकृतेजाय
 ॥ १८ ॥ नः ॥ ॥ अथ श्रीवज्रधनगृहं अथ सहस्रं ऊपरुगं ४ पूर्वमवाकृणारुवमिः ॥ नाशो वज्र
 धनगृहं ऊपरुगादिव्यमिन्नूपैष रथमिः ॥ यवनमिन्नूतिगन्धनन्ददागिः ॥ ॥ नाशो
 वैकमिर्गंगत्वा अथ सहस्रं ऊपरुगं ॥ एकदिवसं पुनः ४ अथ ॥ दिगीयदिवसादि ॥ मन ॥
 व्यम्हीपुनः नक्ति रथमिन्नूतिगन्धनन्ददागिः ॥ रुग् ॥ यदिवसं वलीरायन् ॥ ॥ १९ ॥

स्थापयसि ॥ साधकनवकाव्यं रादवर्ग उपस्थापिकारुवमिः ॥ यावज्जीवमिकालं सर्व
 दायिकारुवमिः ॥ ॥ अथ श्रीवज्रधनगृहं अथ सहस्रं ऊपरुगं ४ पूर्वमवाकृणारुवमिः ॥ नाशो वज्र
 धनगृहं ऊपरुगादिव्यमिन्नूपैष रथमिः ॥ यवनमिन्नूतिगन्धनन्ददागिः ॥ ॥ नाशो
 वैकमिर्गंगत्वा अथ सहस्रं ऊपरुगं ॥ एकदिवसं पुनः ४ अथ ॥ दिगीयदिवसादि ॥ मन ॥
 व्यम्हीपुनः नक्ति रथमिन्नूतिगन्धनन्ददागिः ॥ रुग् ॥ यदिवसं वलीरायन् ॥ ॥ १९ ॥

॥ २१ ॥ गिः वसवसायनेददामिः अथ ४४ न पनि वा न धवकुलीका न राजनानि च ददामिः ॥
॥ २१ ॥ चवर्वसहस्राधिजीवयन्तिः यदा नृयगे नाजकुलजायगे ॥ ॥ नाजी नाज नृदेग
वा अथ सहस्रं जपत्सर्वसं वा क गारुवन्ति ॥ पश्यन्ती न लो क न वी न का र्धे न गिं प्रजात्य
मालगी पृथ्वी दधिमधू घृणार्क नाथ सहस्रं श्रुयात् ॥ मन्त्रं नृदेव वीरु न वाही प ॥ मन ॥
॥ २१ ॥ अथ गिः पनि वा न धमहान् पुन ४४ न न ही प्रमागच्छन्ति ॥ शगमाया ४ कृत्स्नमादक नार्थी ॥ २१ ॥

दय ४१ वक्ता व्याश्रुनारुगिनी शार्थ्यारुवन्ति ॥ यदि मा गारुवन्ति विरुन इषयमि
दिव्य कामि क रुजनं ददामि ॥ यदि शार्थ्यारुवन्ति स्वधर्मे लोका न ददामि ॥ यदि रु
गिनी रुवन्ति नार्थ ददामि याजन ४४ नोद पि क्रियमानां यददामि ॥ यदि शार्थ्यारुव
न्ति दिव्य क्रि सृष्टि काम रोग ददामि सर्वा सा प नि पून यमि ॥ द ४१ वर्वसहस्राधिजी
वयन्ति ॥ यदा नृयगे नाजकुलजायगे ॥ ॥ अथ पृथु मासीद ४ सहस्रं जप

॥ २३ ॥ कामिः। वनः सुवर्धुमः पत्न्ययः कृमिः। न नाना मासीदा मयी दिनः गृह्णाति भुजि
 नृर्द्धिः स्फुटः मिश्रियः न वा। अथ महः ॥ नाना महादेवाः शनकः विशाधनः वरिषः निवृत्तीसप
 निवा मान् अने कापानयः जनाग किन्न नमहीनः गान् अनेक नियुगः भग सह सान् नस्य
 पर्यन्तः धुलं श्रीवज्रधनः महाक्राधाधिपः नृपदः क्रिधी कृत्यपादो भिनः सौवन्दित्वा
 रगवतः ममेदवा वनः। राघवः महाबाधिसत्त्वाः प्रणिहः न ॥ सनस्यः श्रीधरुकमः ॥ २३ ॥

हानाजस्यः सर्वरुगनागयः ज विशाधनानीरुयैकः चस्य सर्वविघ्नविनायकः इह रवः
 विनाशनस्य सर्वग्रहवन्ताः कटपूटनादिमानेष्टास्य सर्वनेहस्य मधुलसाधनीस्य
 ॥ अथ पर्यन्तः धुलं महेः श्रीकृमात्तरुः नमहाबाधिसत्त्वेन रुगेः धनमहादेवस्य सा
 धूकानमदात् ॥ साधुः महादेवपत्निः भक्तलपेक्षिभः समयः जाम्बुद्वीपकानीमनः
 ध्यानाहिगार्थः सर्वरुगनागयः ज किन्नः च वगि साधनवकुं महाक्राधाधिपः नमधु

॥रुग॥

ने॥प्रथमपुटस्य॥

॥वायव्यधुलक॥ व पूजा देवीयथाक्रमे॥ सीलिखकनकवर्धु

॥२५॥

सर्वालीकानरुषिर्गै॥ ४४ व द्रसिगनागधरुगवर्गनिनी जमान्॥ कोधस्यवामहागदोउमाद
वीनृपहस्तका॥ कोधस्यपुनगालय्यथीदेवीपुहस्तका॥ कोधस्यदक्षि॥ भगलगप्रिनारु
मीसमालिखेग॥ गृहीतधूपहस्तकासर्वालीकानरुषिर्गै॥ कोधस्यपृष्ठहागवमभिदे
वीसमालिखेग॥ गृहीतदीपहस्तकाहिभिषिकुलविरुषिर्गै॥ अग्नेनत्रयियतिरव्यय

॥मन॥

॥२५॥

हीनगन्धहस्तका॥ नेर्ज्यमालिखेदेवीसनस्वनिवाधहस्ताअनेकगीनवाद्यादिनृपपा०
सुखापिगा॥ वायव्ययजिधीलिख्यगृहीतनत्रमालिकासूनसुन्दनीनाम्नाचसर्वयजिध
नीस्मृगा॥ वेधान्यामालिखेहूनिमारुगिनागरुषिर्गै॥ सर्वरुगैध्वनीनाह्नीसर्वालीकान
रुषिर्गै॥ चालूवकुर्विधालोकीरूपयोचनमन्दिनीसुवर्धुवर्धुसंकाधानीलकुशिर
गन्धर्वावासरुर्गै॥ अग्नीदेवीसाधनाकुलस्त्रीयीद्वितीयपुटस्य॥

॥२५॥

॥ २७ ॥ दवगा ४॥ गग ४ श्रीमहाकाठ मूर्धावक्राप्रविष्टवैकुण्ठा ॥ हं वक्ररुद्र ॥ एवमूर्ध्वानि
॥ २८ ॥ नमार्द्रधस्वयंकाठप्रविष्टानि गग ४ भिष्यप्रनमयन्नीलवस्त्रधमुरववर्धकृत्वा
 धमूर्धावक्रामूर्ध्विकाप्यवक्रादकंमुखदापयन् ॥ ओं गिरिसिद्धिहं ॥ अन्ननस्कापयन्
 ॥ गग ३ प्रविष्टाकाधै हं हं हं ॥ अन्ननमन्त्रेकाधैवममयमहं कानध
 सुभद्रमप्यावमयन् ॥ श्रीगानागगवरुमानैकथयति ॥ गग ४ पूज्यादिनिर्दिष्टरुगा

॥ मन ॥
॥ २७ ॥

महामधुलवधविधिविस्तृतकथा ॥ श्रीगोवर्धनमन्त्रनाम २
 मुखवर्धमूर्धाकुलदवर्गादर्शयन् गगानामारिषकाद्यमूर्ध्वमन्त्रेभ्यः ॥
 ॐ गिरिगतामन्नमन्त्रनाम सिद्धिमहामधुलमन्त्रविधिविस्तृताख्यगिरि ॥ प्रथमं गावह
 यचन्द्रमधुलैरावयन् मधुलैकानंजालामालाकुलप्रलंकावयन् ॥ हृदं मन्त्रमूर्ध्वान
 यन् ॥ ओं सिवयहं ॥ गग ४ सर्वपापविनाशनमन्त्रमूर्ध्वानयन् ॥ हृदयचन्द्रमधुलै
 लाकुलवहं विन्दुसहिगंजालामालाकुपृणं मन्त्रमूर्ध्वानयन् ॥ पुनरुधुस्फटिकारुणाधि

॥ ६० ॥

॥ ३० ॥

नाऊ सिद्धिमहामधुलमन्त्रविधिविस्तनगन्तु ॥ ॥ अथानीरुगतामनगन्तुनाऊ
महामधुलमन्त्रात्तजधविधिविस्तनीरुव ॥ अथान्यागुं सिवज्ञानर्कनीदयप्रसानयरु
र्कनीरुवीकृत्वापमासनमूडा ॥ १ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीदयवैद्यग
॥ जोधवैद्यमहामूडायेलायैजधमावठग ॥ २ ॥ अथयउर्जमूडारुवनि ॥ अथ
न्यमूर्धिरुत्वामध्यमागुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥ अथान्यवमूडयाम

॥ मन ॥

॥ ३० ॥

धमार्जुनोप्रवैद्ययरुर्कनीरुवीकृत्वाभिषाममूडाम २ ॥ अथान्यवमूडयाभुर्गुं
पोर्ध्वगदजिधनं वामार्जुंस्त्वामनं येयाजयगुनं वमूडा ॥ ३ ॥ अथान्यमूर्धिरु
कृत्वाकनिष्टदयवैद्ययरुर्कनीप्रसानयग ॥ हृदयमूडा ॥ ४ ॥ अथान्यवमूड
यागर्कनीकृत्वाकृत्वाकववेमूडा ॥ ५ ॥ अथान्यवमूडयागर्कनीप्रसानयग ॥
हृदयमूडा ॥ ६ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वाध्वीगुलोपाध्वग ॥ अथमूडा ॥ १ ॥

॥ २८ ॥ भूमा न्यमूर्ध्वं कृत्वा अंगुष्ठोपमानयन् आ ऊपमूडा ॥ २ ॥ **भूमा न्यमूर्ध्वं**
॥ ३१ ॥ कृत्वा पृथक् पृथक् कृत्वा मवामगर्जनी प्रसार्य वाहू मूलस्थापयन् ॥ दक्षिणांगुष्ठेन
 कनीयनीसीनखमाक्रम्य अर्धगुलिप्रमाणे दक्षिणवाहू मूलने निक्षिपन् ॥ दिक्
 बन्धमूडा ॥ ३ ॥ **अथ महादेवमूडारोचनम्** ॥ उक्तानम ऊर्लि कृत्वा गर्जनीद्वयं **॥ मन ॥**
 कार्ग्यं कुर्यात् ॥ नूदस्य रगमूडा ॥ १ ॥ **उक्तानम ऊर्लि कृत्वा गर्जनीद्वयं** **॥ ३१ ॥**

वक्ष्यामि ॥ यन् नाना यथास्य षीखमूडा ॥ २ ॥ **भूमा न्यमूर्ध्वं** लि वक्ष्यामि कनीयनी
 मानयन् ॥ प्रजापते ४ कम धुलु मूडा ॥ ३ ॥ **वामहस्तमूर्ध्वं** कृत्वा मध्यमार्गुलिप्र
 मानयन् ॥ काश्चि मथन भक्ति मूडा ॥ ४ ॥ **वामहस्तमूर्ध्वं** कृत्वा गर्जनी मध्यमार्गु
 लो गर्जनी सीकं मध्यमार्गुलि मध्यपर्वधानयन् ॥ गेधोपग ४ पन धु मूडा ॥ ५ ॥
उक्तानम ऊर्लि कृत्वा स्वस्तिकं गजेकानयन् ॥ वामकनीयसीरग्न अर्गुष्टमूर्ध्वं स्थाप

॥ ३१ ॥ यत् ॥ वा मा र्जुं ह मूर्ध्नि द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥ ३ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 ॥ ३२ ॥ र्थे न कूर्च न्ना मि का र्जु म् कृ त्वा न ना हु म् डा ॥ ७ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 र्ध्नि स्था प्य वा म ह म् मूर्ध्नि कृ त्वा र्जुं नी म ध्मी च प्र सा न य न्ते ॥ ४ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 सी श्रु नो मि का न रे नो क र्थ ये न्ना न ना हु म् डा ॥ ८ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 थ क्ते नी य सी व च य न्ना च च स्म म् डा ॥ ९ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~ ॥ मन ॥
 ॥ ३२ ॥

गम
 ह म् म् या र्जुं कान ध र्म द र्जुं कृ त्वा र्जुं ह म् मूर्ध्नि स्था प्य य न्ते ॥ १ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 रु व नि ॥ स कृ त्वा र्जुं नी श्रा का र्जुं ह म् मूर्ध्नि स्था प्य य न्ते ॥ २ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 श्रु न्ना न्म मूर्ध्नि कृ त्वा र्जुं नी व च य न्ते ॥ ३ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 ॥ ३ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~ ॥ श्रु न्ना न्म मूर्ध्नि कृ त्वा र्जुं नी व च य न्ते ॥ ४ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~
 ग्ना न्म कूर्च नी न त्वा कान ध र्म द र्जुं कृ त्वा र्जुं ह म् मूर्ध्नि स्था प्य य न्ते ॥ ५ ॥ ~~॥ द जि धा र्जुं ह म पि श्रा दि श्य न थ म् डा ॥~~

॥ ४४ ॥ **ॐ** नत्वक्षियस्वाहा ॥ ४ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~स्व~~ ~~स्वी~~ मूडारुवनि ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **सि** **व** **क्षारु** **कु**
॥ ३३ ॥ नीदयप्रसार्यमुखस्वापयण ॥ ५ ॥ **अथ** ~~गि~~ ~~ना~~ ~~रु~~ ~~मा~~ ~~या~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **सि** **व** **क्षारु** **कु**
 सिमन्निर्गणोअलिखितसिद्धानयण ॥ ६ ॥ **अथ** ~~न~~ ~~का~~ ~~या~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **सि** **व** **क्षारु** **कु**
 हस्तैरवद्वानधदयस्वापयण ॥ ७ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~य~~ ~~अ~~ ~~ध~~ ~~नी~~ ~~सु~~ ~~न~~ ~~ह~~ ~~न्~~ ~~नी~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ **॥ मन ॥**
 ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **क** **नि** **ष्टा** **द्व** **य** **प्र** **सा** **न** **य** **ण** **क** **नि** **ष्टा** **कु** **धु** **लि** **क** **त्वा** ॥ ८ ॥ **अथ** **॥ ३३ ॥**

रुगिनीमूडारुवनि ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **क** **नि** **ष्टा** **द्व** **य** **प्र** **सा** **न** **य** **ण** **क** **नि** **ष्टा** **कु** **धु** **लि** **क** **त्वा** ॥ ९ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~नी~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~ही~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **ग** **कु** **नी**
 द्वयवस्थयण ॥ **अथ** ~~रु~~ ~~गि~~ ~~नी~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ॥ १० ॥ **अथ** ~~गि~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~ग~~ ~~लु~~ ~~ना~~ ~~अ~~ ~~म~~ ~~ह~~ ~~म~~ ~~धु~~ ~~ल~~
 मूडालकुधविधिस्तनगलु ॥ ११ ॥ **अथ** ~~वा~~ ~~कु~~ ~~रु~~ ~~गी~~ ~~य~~ ~~प्र~~ ~~ग~~ ~~स्य~~ ~~ह~~ ~~द~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~नु~~ ~~वि~~ ~~धि~~ ~~वि~~
 स्तनारुवनि ॥ **अथ** ~~ना~~ ~~य~~ ~~स्वा~~ ~~हा~~ ॥ **अथ** ~~व~~ ~~द्व~~ ~~स्य~~ ॥ **अथ** ~~अ~~ ~~ग~~ ~~न~~ ~~य~~ ~~स्वा~~ ~~हा~~ ॥ **अथ** ~~न~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~त्न~~ ॥

॥ हग ॥ ओं यमाय स्वाहा ॥ याम्माय म ॥ ओं नाजसाधिप गयहन ॥ स्वाहा ॥ नेजसाधिप
 ॥ ३४ ॥ ग ॥ ओं वरुधाय नागधिप गयहन ॥ स्वाहा ॥ पस्विमवरुध ॥ ओं वायुय वसु ॥ स्वाहा ॥
 वायुय वायुर्देवगा ॥ ओं कुरवाय यजाधिप गय स्वाहा ॥ उरुनेवे अवध ॥ ओं वंदाय स्वा
 हा ॥ ६६ ॥ नचन्द्र ॥ ओं श्रीक्षानाय स्वाहा ॥ नृक्षान्यो श्रीक्षान ॥ श्रुथवाक्रमधुलमृडात ॥ मन ॥
 ऊधविधिविस्तारवर्गि ॥ दजिधहस्तमूर्धिरुत्वाध ॥ श्रीगृधनकन्यकायानरवमाक ॥ ३४ ॥

लघोगुलिविचलीकृत्वा ६६ द्रुममृडा ॥ १ ॥ वामहस्तमूर्धिरुत्वाकिशिश्वान
 यदग्निमृडा ॥ २ ॥ दक्षिणमूर्धिरुत्वागर्जनीप्रसानयन ॥ यमस्यदधुमृडा ॥
 ३ ॥ दक्षिणहस्तमूर्धिरुत्वागर्जनीमध्यमाप्रसानयन ॥ जसाधिपस्यरवमृडा
 ॥ ४ ॥ वामहस्तमूर्धिरुत्वागर्जनीप्रसानयन ॥ गर्जनीकृधुलीकृत्वावेरुधस्यना
 गमृडा ॥ ५ ॥ वामहस्तमूर्धिरुत्वासव्यार्जमूर्धिरुत्वागर्जनीप्रसानयन ॥ वायाशप

॥ रुग ॥ टाकमूडा ॥ ३ ॥ दक्षिणरुक्मसिद्धिं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं वृमाकन्यसुखं वागु
 ॥ ३५ ॥ सिद्धमानयन् ॥ ४४ ॥ नस्य सिद्धिं नमूडा ॥ ॥ अथ प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ संप्रहृष्टमूडारु
 सिद्धिं च प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ ॐ सिद्धिं वज्रश्रापनयश्च ॥ प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ ८ ॥
 अथ सिद्धाकर्षणमूडा ॥ अथान्यमूडि कृत्वा कनिष्ठाद्वयवस्थेयगे ॥ गर्जनीप्रधान ॥ मन ॥
 अथ कृष्टसिद्धाकर्षणमूडा ॥ अथान्यमूडि कृत्वा कनिष्ठाद्वयवस्थेयगे ॥ गर्जनीप्रधान ॥ ३५ ॥

॥ १० ॥ दक्षिणरुक्मसिद्धिं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं वृमाकन्यसुखं वागु
 ॥ सिद्धमानयन् ॥ ४४ ॥ नस्य सिद्धिं नमूडा ॥ ॥ अथ प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ संप्रहृष्टमूडारु
 ० ॥ अथ रुक्मसुखमूडारुवनि ॥ वामरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मसुखं वागु
 दक्षिणरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मसुखं वागु ॥ दक्षिणरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मसुखं वागु
 कन्यसुखं वृमाकन्यसुखं वागु ॥ ३५ ॥

॥ रुग ॥ दक्षयश्चत्रयश्चाहा ॥ रुगासनमन्त्रः ॥ ११ ॥ अथ सर्वदेवगाया आसन
 ॥ ३६ ॥ मृडारुवनि ॥ संप्रदीर्घलिङ्गामर्घां गुं लि समा ३३ लि ४ पद्म मृडा ॥ ओं पद्म रुग
 वनि यथीय सर्वदेवगानी स्वाहा ॥ सर्वदेवगा आसन पद्म मृडामन्त्रः ॥ १२ ॥ अ
 था वच पद्म मृडया धाव गुं हो वा च यत्सर्वदेवगा विसर्ज्जन मृडा ॥ ओं सन २ विस
 न २ गच्छ २ सर्वदेवगा श्रीवज्रधनः समाह्वय गि स्वाहा ॥ विसर्ज्जनमन्त्रः ॥ सर्व
 ॥ मन ॥
 ॥ ३६ ॥

सिद्धि महाक्रोध मूर्ख सिद्धि दायकः ॥ दत्तावडी महासिद्धि गच्छ सिद्धि मन्त्र रुनी
 ॥ भूने नरका ३६ मृनया ६० गिरु गताम न महा गच्छ नोर्ग सिद्धि मेहान धुले
 स्प सर्वदेवगा यामृडा विधि विस्मने गच्छ ६४ दुर्थः ४ कल्पः ॥ ॥ अथ खलु वज्रपा
 धि महाक्रोध धिप गि निद मृवा च ॥ अथ मधुल स्पदर्शन माय ६४ धे धा रुक नाथी
 प्राप्ता गि ॥ ॥ वज्रधन जाप माय ६४ वज्रधनो रुवनि ॥ अस्मिन् वातु दीपक च

॥ २८ ॥ रुवनि ॥ श्रीवक्रधनमहाक्रोधधियनिनामाञ्जानिगमार्जधसर्वरुग-रुगको
 ॥ २९ ॥ रुवनि ॥ अथमन्त्रीधर्माकुञ्जमार्जधसर्वलोकिकदेवगाश्चभगवधुवीक्षीर्येन ॥ सर्वदे
 वनागयजादिदृष्टिनाकुञ्जधियनि ॥ सर्वलोकिकदेवयारुंकानमार्जधप्रपत्ताय ॥ अ
 थश्रीवक्रधनमहाक्रोधधियनिमन्त्रं लेख्यं जपन्ति प्रसिद्ध्यन्ति ॥ पूर्वस्ववारुवनि ॥ २९ ॥ मन ॥
 ननात्मजजाचरुवनि ॥ अथवक्रधनसाधयिषु कामामासमर्कयिषु संधीसहस्रजप ॥ ३० ॥

ग ॥ प्रधुमास्मीविधिवत्पूजाकृत्वा क्रोधमूद्राश्च वक्रधनसकलनाडिं जपन् ॥ ग ॥ ४५
 लार्गं रुक्मिणं मूद्राचक्षुर्लनिमार्जधबंधनसहस्रारुवनि ॥ अजनामनदिव्यरूपा
 रुवनि ॥ १ ॥ अथउमादेवीसाधयिषु काम ॥ उमादेर्विवामपादेनाकस्यायुर्ग
 जपेत्स्वयमवागच्छति ॥ सर्वद्रव्यचनेनसायनेददानिराग्यारुवनि ॥ यदिनसिद्ध्य
 निगदाविषयधियेधसपयग्वामपादेनाकम्पदेक्रोधमन्त्रमूद्राचयन् ॥ ३१ ॥

॥ हूँ ॥ कृमिजदिनागनिगच्छा देवसिद्धयम् ॥ ॥ नानायध्वामपादेनाकम्पादसह
 ॥ ३६ ॥ सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निगयदिनागकृमिनिस्फूटनिस्त्रियर्गवा ॥ अ
 स्मनानायध्वविध्यारुवनि ॥ किंकनारुवनि वनकोरुवनि ॥ २ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~
 नाकम्पादसह सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निकिंकनारुवनि ॥ यदिनागक
 मिस्त्रियर्गवा ॥ ३ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~ नाकम्पादसह सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयु

॥ मन् ॥
 ॥ ३६ ॥

मागच्छा निअस्फ ॥ किंकनारुवनि ॥ उर्वक्षी देवकन्यसामानीयददनि ॥ यदिना
 गच्छा निअस्फिस्फूटनि ॥ अगवध्वसर्वकुल्लगा सुविनध्य ॥ ४ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~
 नाम्पादसह सुअपदिवसानीस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निकुमानकिंकनारुवनि सर्वकु
 मानयुहाध्वनकारुवनि ॥ अमृकजीवापयनि अमृकमानयनि ॥ ५ ॥ ~~गधप~~
 निवामपादेनाकम्पादसह सुअपदिवसानीस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा नि ॥ यदिनागक

॥ रुग ॥ मिश्रियनः सर्वविनायका किंकनारुवनिः ॥ ॥ अद्विष्टवामपादेनाक्रम्याष्टस
 ॥ ४० ॥ हर्षजपदिवसानीसफः श्रीधुमागच्छमिनाश्रुददामिः ॥ ७ ॥ वदमावामपादे
 नाक्रम्याष्टसहर्षजपदीवसानीसफः श्रीधुमागच्छमिनाश्रुददामिः अस्या
 चन्द्रावधविधयारुवनिः ॥ ८ ॥ नववामपादेनाक्रम्याष्टसहर्षजपदिवसानी
 सफः पुननाश्रीउदानीपूजाकृत्त्वामहामात्मनधूपेदत्त्वामहामात्मननववर्षदत्त्वा ॥ मन ॥
 ॥ ४० ॥

महानेतनदीपप्रजालयन गगाश्च नाग्रममथमहानादप्रमृशति भूदृष्टहासना
 गिच्छतिः शलासाधकरु अयामि नववदमिः गगानरुगव्यथदिकदाविद्रुयैरुवनिः
 ॥ हंकानदद्यात्स्वस्कारुवनिः ॥ नववदधविधयारुवनिः ॥ नुधातुकनाश्रुददामिः ॥ हंक
 कानमाश्रुधः सर्वलोकिकदं वनाश्रयनिः ॥ ९ ॥ नववदधविधयारुवनिः ॥ नाक्रम्या
 ष्टसहर्षजपदिवसानीसफः गजधः देवागच्छमि किंकनारुवनिः ॥ १० ॥ मरु

॥ रुग् ॥ काले वामपादे नाकम्पाद्य सहस्रं जपदिवसानीसफः सगधपनिवानधगकृगियदिना
॥ ४९ ॥ गकृगिगजधदवप्रियममहाकालधगकोरुवगि ॥ ११ ॥ ~~वदुर्मूर्खीधनायन~~
 नैगत्वा वामपादे कुम्पाद्युर्गजपदिवसानीसफः सगधगकृगि ॥ यदिनागकृगिप्रिय
 म ॥ सपनिवानाकिंकनारुवगि ॥ पृष्ठमागोप्यस्वर्गमपिनयगि ॥ उर्वशीमानीयदद
 निदिव्यनसनसायनंददागि ॥ ~~४९ ॥~~ ~~रुग्वान्धुीवजधनमहाकोधधिपगि ॥~~ **॥ मन ॥**
॥ ४९ ॥

~~गिरुगजामनगन्धनागकिंकनगाधनविधिविद्वान्धुप ४९ ॥~~ ॥ ~~अथागाड~~
 पनमिगवलपनाकमस्युधधुकेनमरुगस्यसाधनेप्रचक्रौगिसयकोधनखाविर्ग
 मवृष्यार्धाहिगार्थायरेगिसाधनमूढनै ॥ शालेरुपमकानीधामृधावादिनामपिसि
 द्यनि ॥ किंनून ४४ ॥ निवर्कनिशामिषवक्रचर्थेधससस्किगानीनिर्यकोधजापिनी
 पनमन्धुधार्क्यधीपृथगरुगिनीनीनागिनीनीयजिधीनीयदीरुत्तिधिनुरुमाभासा

॥ हृग ॥

॥ ४२ ॥

धकानां हि गार्थाय उपस्थापिका उच्यते ॥ प्रथमे साधने कृत्वा द्वितीये सिद्धिं मूर्तमां
विद्याधनासूत्रसूत्रमिहा महाविधानं विनामधिरुद्रघटादियजिहीसाधने वा पिशाचीषा
लक्ष्मिः काष्ठं श्यवमादय ४ सिद्ध्या ॥ किंपूनः ४ गन्धं ४ मि उक्तवान् ४ धा ॥ हृगिनी च द
वरीना नागकिन्नरमवच ॥ सिद्धयं गत्वा दैव ४ गन्धं ४ नाधिव ॥ ~~कनका~~ मनम
हा गन्तु नागसर्वस्वत्वा ४ दैवसिद्धयि ॥ धीर्घृयय ॥ कृमिसाधक ४ आचार्यनिन्दका

॥ मन ॥

॥ ४२ ॥

४ सर्वस्वदेवतामपि निन्दका ४ मन्त्रजापिसदा कुर्वन् ४ सर्वधर्मप्रणिष्ठाप ४ सर्वग्रसम
यत्तुं सिर्नास्ति मन्त्रविवर्जित ४ अधमा ४ सिद्धं गन्धं यैकाधनराधिगता ४
~~हृगवान्~~ धीवकाधनमहाक्रोधाधिपतिः ॥ ॥ ~~अथानापना~~ धपिनहस्यागिने
हृत्पुरुषो मनः गन्तु नागसाधनानिरुवन्ति ॥ प्रथमे गावस्य णिगमा ४ दसिद्धयि नि
सर्वदेवरी किंकनी ॥ ~~धीवकाधनमहा~~ क्रोधाधिपतिमन्त्रापमा ४ धीर्घृयसिद्ध

॥ हृम ॥ मि ॥ ~~अथ मन्त्रः~~ सिद्धिं शुभाय विष्णुविना हने ॐ श्रीं हं क ह २ अमृकं ज ४ ॥ हने
 ॥ ४३ ॥ न को धस हि न न ज प ह व अ ह ह न ज प म अ ध धी घु मा ग क नि स र व र दी का रु वे नि
 यदि ना ग क नि धी घु अ जि नृ द्वि रू दं मि स क ल ल अ वि न व ॥ ॥ ~~गो व न न ह~~
 मि नी प्र मि मा मा लि ख वा म पा द ना म्पा ह स ह भुं ज प रू क षा द वा हा हा का न ह न ना ग रु ॥ मन ॥
 मि स्त ना मि २ हा हा सा ध क कि ना ह्य प य मि सा ध क न व क वी हा रु मि नी अ स्मा कं व दि ॥ ४३ ॥

रु व स्प मि ॥ अ न व र्षा शि र टि क र्मा धि क ना मि ॥ ॥ ~~रु ज प रू ना ना व न न ह~~ मि नी प्र
 मि मा लि ख वा म पा द क म्पा ह स ह भुं ज प रू क षा द वा ग रु मि वि हा व ना न ग त्वा ह स ह
 भुं ज प रू ॥ ना जी कृं ज म मि र्ना म रु मि न्पा ग रु मि ॥ अ ग ना या व लिं द प य न ॥ क म कि म या
 क रू वी सा ध क न मा ना भ रु व र्षा मि ॥ मा रु व स्य मि पा ल य मि ॥ अ त्म ना व प र म स्य व
 म्ना ली का नं रु ज ना नि प्र य कं मि ॥ ~~रु मि रू ग ज न न ग ल ना र्ज व दि सा ध न वि धि वि स्त न~~

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

मपानककुलहाविहीदगिनीनीयनमागकुमिः आगगायामुधिनः ॥ घादियठकुलारुवमि
साधकनवकव्यंमागारुवस्वमिः पुत्रवत्समिपालयगुपय ॥ १ ॥ अथसिंहनासाधनरुवमिनाथो
वकलिर्जंगलाभयुर्गजपत्स्वयंभवाग
कुमिरासाधककिंकनीमिमिः साधकनवकव्यंराय्यारुवस्वमिः नसनसायनैदिव्यं
वददागिः ॥ अथदीनानाधिवन्तुयुगलैददागिः ॥ ३ ॥ अथगसिनीसाधनरुवमिः

॥ मन ॥

॥ ४५ ॥

वज्रपाथिसहैगलादिव्यविमानमस्यशुभदिवसाधनरुवमिः ॥ वज्रपाथिसन्निधौलिखित
कनवीनपुष्पप्रकनर्धदत्ताउपल्लावथाचदङ्गनाथस्वयंभववज्रधनगृहंभीष्टमागकु
मिः आगगायामुन्दनादकेनाघादियठकुलारुवमिः ॥ रासाधककिंमाह्लापयसिः सा
धकनवकव्यंअस्माकंकिंकनीरुवस्वमिः निश्यानुवृद्धारुवमिः ॥ कम्बुलंकोनराजनानि
प्रयकुमिः गानिनिनवत्सव्ययिकर्कव्यानिः ॥ यदिकिश्चिच्छ्वपयमिः नथनरुवमिः

॥ रुम ॥ ॥ ४ ॥ नदिर्गमगत्वा अरुत्तं रुत्तं जपदिवसानि सफः ॥ सफमदिवस उदानां प्रजां क
 ॥ ४६ ॥ ता आदिष्यात्तै गन चन्दन न धूपै दत्वा गावशा वक्रपदं जना यं भी घुमा गच्छति ॥ आगमा
 या कामरागमा राध्या हिवगि ॥ दिव्यसुवर्धु पत्न्यै वयनपनिर्यय प्रणन नागच्छति
 ॥ एवं दिनदिन निर्यस्थारुवगि निनवर्धयै वयै करुव्यं ॥ यदि किञ्चित् स्नापयति रु
 यानरुवगि ॥ ५ ॥ अथामा महावटिसा धनविधिविस्तरेष्ववश्रामि नाना सिद्धिना ॥ मन ॥
 ॥ ४६ ॥

धनं नामा चानधमायुधं ॥ कुर्वन्सिद्ध्यति ॥ धनमिति भावः ॥ न जायते न हानमानं पूर्वमेवाप्रजा
 पते सिद्ध्यन् गत्वा ॥ ६ ॥ देववज्रपाधिवचा यथा ॥ ३ ॥ अथ वगिसा धनं रुवगि नाना
 खरुहानं गत्वा जपदिवस्मनि विनिर्णीय गमा गच्छति ॥ वेदिकर्माधिकवागि ॥ स
 र्वं कृषिकर्माधिक्यरुहसत्कां नादीनि च ॥ वचनादिनी च कर्माधिकवादि ॥ ४ ॥ अ
 थका मेधनी सा धनं रुवेगि ॥ मान्सा हानधमारुका स्नानं गत्वा यात्री मत्स्यमान्

॥ ८५ ॥

॥ ८६ ॥

विधिनायावदयः स ह्युवाचान्दिवसानि सफनियतमागच्छति ॥ आगतायापयः ४ नृधिवधार्थं
दयः ४ स्तामिनकिमाहपयसि ॥ साधकेनवकव्यमस्माकीकार्यारुवस्वति ॥ सर्वसापनिपुनयति
नाशददाति ॥ ८७ ॥ ~~अथ श्रीसाधनेरुवतिनाडीद्वयगृहधर्माकल्पयः कृषिकचन्दनसिक्त~~
~~पुष्पधार्चयः ॥ गुरुं नृधुपदत्ताज्यमहसुं ऊपय ॥ ऊपान्ननियतमागच्छति ॥ अलिंगधनुस्त्र~~
~~नेयथकीकामयितुर्थं ॥ दिव्यकनकवस्त्रं कुमालिसर्वालंकाचरुषितोम्यजतिरुवति ॥ अथ~~

॥ मन् ॥

॥ ८८ ॥

शिनानेवमुगलंचसपनिवाचस्यकामिकरुजनेददाति ॥ अथवेधमक्षगृहद्वयमानीय
ददाति ॥ न हस्यतानि ऊपय ॥ ऊपान्नसिद्धानि ॥ अथविश्याहृगवान् ॥ ~~अथमन्त्रक~~
~~नाजः ॥ अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥
॥ अथमन्त्रक ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥ ~~अथमन्त्रक~~ ॥
द्विनिकमसाधनस्यसर्वदेवमाचधमन्त्रपदराधनम् ॥ ओं हन २ सर्वमाचयवर्कजालय
हं हं ॥ अथस्मिन्नापितमात्रं धवम्नाविद्युर्महं ॥ अथनादिसर्वलोकिकदेवका ४ अनक

॥ रुद्र ॥

॥ ४७ ॥

विया धनय कनाग प्रकपि ॥ च गन्धर्व किन्नर म हा न ग ग वृ ऊ दि सर्व र व ना ४ ख ७ ख ८
मा नी रु र १ ४ अ म ऊ ३ श्री कृ मा न रु गो वा धि स त्वा म हा स त्व ४ म वि स्त य ५ व मा रु १ सा धू २ श्री
व रु ध न म हा को धा धि प कि ४ प र्वि म काल प र्वि म स म प स व दू स र व ना दी नी नि गू र्म मि नि
पू धा स न सा स्का या स्मि न्य र्ष द म लु ले श्री व रु ध न म्ये पा दो शि न सा व न्दि त्वा स्त ह र य म द
इ १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ सि द्ध्या १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ तिला कृ मा १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ का र्क न मा ला १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ की १ ४ क ७

॥ म न ॥

॥ ४७ ॥

ल मा नि धी १ ॥ ३ ॥ रू र त्वा ला १ ॥ ३ ॥ म र व ला १ ॥ ३ ॥ उ र्व श्री १ ॥ ३ ॥ रू वि धी १ ॥ ३ ॥ अ थ स व स
सि द्धि सा ध ना ध न वि धि वि स्त वा रु व मि १ ॥ प र्व न शि व न मा वृ ष्ट ल रू र प र्क १ ॥ घु मा ग कृ मि
१ ॥ आ ग ना या ध न्द ना द क ना र्धा द य १ ॥ वा ला नि रु र व य मि १ ॥ १ ॥ अ थ तिला कृ मा सा
ध न रू व मि १ ॥ च न्द न का स म यु र्ग रू प रू दि व सा नि स फ स फ म दि व स उ दा र्ग पु र्जा कृ त्वा ७
का र्क म्या प र्व न म र्दि स क ल वा र्दि रू प रू रू रू नि य न मा ग कृ मि पू र्व न मि रू मि १ ॥ अ लि

॥ ८८ ॥

॥ ८९ ॥

॥ १ ॥ अथ चतुर्विंशति श्रवणकामयितव्या ॥ नवैति द्वादशवर्ति ॥ यमिच्छति न ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम
मपिनयति पुनर्वापि वा ददाति ॥ २ ॥ अथ चतुर्विंशति श्रवणकामयितव्या ॥ नवैति द्वादशवर्ति ॥ नदीसंगमं ग
त्वा ॥ सप्तहस्त्रं जपेद्विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ सप्तहस्त्रं विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ पुनर्वापि वा ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम
॥ नदीसंगमं गत्वा ॥ सप्तहस्त्रं जपेद्विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ सप्तहस्त्रं विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ पुनर्वापि वा ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम
किमया कर्तव्यमिति ॥ साधकं न वक्तव्यं मानां मरुतस्विति ॥ मातृयति पालयति रुक्तालंकाव

॥ मय ॥

॥ ८९ ॥

वस्त्रादीनि सप्तहस्त्रं जपेद्विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ जीवति ॥ ३ ॥ अथ चतुर्विंशति श्रवणकामयितव्या ॥ नवैति द्वादशवर्ति ॥ स
मिथिना पवासा विधीयते ॥ पर्वण्यं मूर्ध्नि गत्वा अष्टहस्त्रं जपेत् ॥ मासभक्तं पुनर्वापि वा ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम
॥ नदीसंगमं गत्वा ॥ सप्तहस्त्रं जपेद्विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ सप्तहस्त्रं विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ पुनर्वापि वा ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम
नसानमिद्विद्वद्ददाति ॥ ४ ॥ अथ चतुर्विंशति श्रवणकामयितव्या ॥ नवैति द्वादशवर्ति ॥ द्वायनं गत्वा सप्तहस्त्रं जपेत्
मासभक्तं ॥ नदीसंगमं गत्वा ॥ सप्तहस्त्रं जपेद्विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ सप्तहस्त्रं विंशतिं सप्तहस्त्रं ॥ पुनर्वापि वा ददाति ॥ पृष्ठमात्रा पृष्ठम

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

आगतायाऽप्यासने दद्यात्स्वागतं दद्यात् इति वक्तव्यं स्वामिनः किमाह पयः ॥ साधकं न वक्तव्यं
मम कार्या रुवस्वित्ति कार्या कर्मो कर्त्तव्यं दिव्य काम प्रियारु वक्ति वर्ष स हर्ष जीवति ॥ ५७ ॥
~~यथा~~ साधने र्वति ॥ प्रतिपदमाचक्षुः पूजां कृत्वा चन्दनं नमस्तुलकं कृत्वा गन्धपुष्पं दत्त्वा
५८ स हर्षं पत्तिर्मर्ध्वं ५९ पुष्पं सास्याम हर्षं पूजां कृत्वा जपेत् प्रणमनं नियममागच्छति
यदि नागच्छति प्रियं कार्या रुवस्वित्ति च स च सायने दद्यात् ॥ यथैकपाकामयि कथा ॥ दद्यात् वर्ष

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

समाधि जीवति ॥ यदा मयं नाजकुल जायते ॥ ६० ॥ ~~यथा~~ साधने र्वति ॥ नाजोद
गृहं गत्वा चन्दनं नमस्तुलकं कृत्वा गन्धपुष्पं दत्त्वा जपेत् ॥ मासान् यथा विरुवन् ५९ पूजां कृत्वा सकलार्थं
पुण्यं प्रणमनं ५९ पुण्यमागच्छति आगताया कृष्णामामने दद्यात् ॥ स्वागतं मित्रवक्तव्यं ॥ साधक
किं रूपयसि ॥ साधकं न वक्तव्यं मम कार्या रुवस्वित्ति ॥ यत्तं च सायनं सिद्धि इव च दद्यात् ॥ प
वक्तुयादि गमर्ध्वं यत्तं च वर्ष स हर्ष जीवति ॥ ६१ ॥ ~~यथा~~ साधने र्वति ॥

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

साधनेदिनं श्री घुसखवदयकमातावापिरुगिन्यावालायावापिसं रूप ॥ ५१ ॥
वटी ॥ ५२ ॥ हृदिनी वट्ट हलाके सप्रदा ॥ जो धजापी हितार्थ यस्वयं धनी वट्टवान् ॥ ५३ ॥
न्यायमहिमं युक्तं उरी हसी कमला वट्ट या एता मध्यम्य झुलि शुचि कला अष्टासन
समावाप्त सर्वदृष्टि खना धनी मद्रा ॥ उरी हसी रवट का काना ॥ सवोप नवधं कनी ॥ सान्नि
ध्यादि मद्रा सर्वकाम प्रसाधनी ॥ उरी हसी कमला वट्ट या एता सर्वोप नवधं मा हनी ॥ मद्रा

॥ म न ॥

॥ ५२ ॥

वव न्धममाठ ददासिरुवमिकरु धा ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
मनु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
कवदमनु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

॥ ह्र ॥ नदी स्वाहा ॥ सुन सुनदी ॥ १ ॥ ओं सर्वमाहाविधी स्वाहा ॥ मता हवी ॥ २ ॥ ओं कनकमणी
 ॥ ७३ ॥ मेथन प्रिय स्वाहा ॥ कनकमणी ॥ ३ ॥ ओं गङ्गा कामिनी स्वाहा ॥ कामिनी स्वाहा ॥
 कामिनी ॥ ४ ॥ ओं नमिप्रिय स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं पद्मिनी स्वाहा ॥ पद्मिनी ॥ ६ ॥ ओं न
 दीमहानदीमवपनी स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं नदीमहिनी मेथन प्रिय स्वाहा ॥ नदीमहिनी ॥ ८ ॥ ॥ मव ॥
 शुभाष्टादि विधी साधने विधिविरुद्धा रुवति ॥ वरुपादि गृह गत्वा गृहणी धूपदत्तादिर्मध्यम ॥ ७३ ॥

हर्ष उपरु ॥ मासाय नयनिष्कृमाग रुति ॥ आगनायाश्च नदनादकना र्धादयश्च माकारुणी नीला
 र्थावाक म्मासिक वाति ॥ यदि माकारु वति विरुद्धमर्दयि कर्ष ॥ वसवसायने प्रविष्टिने दीनाचल क्ता
 र्थे वाददाति ॥ यदि रुग्णिनी रुवति दिव्य म्पु कामे प्रदा रुवति वसवसायने सिद्धिद्वय च ददाति ॥
 दिव्य देवकन्या मानीय ददाति ॥ शुक्ली काना गरु वरुमाने कथयति ॥ यदि रुग्ण्य रुवति ॥ सर्वसम्प
 दिष्टि पूर्व यति महा धनपति रुवति ॥ १ ॥ अथ मनाहा विधी धने रुवति ॥ नदी टर्कत्वा चन्दने

॥ रुद्र ॥

॥ ॐ ॥

नमधुलकैकृत्यामरुनीपुजाकृत्वा ५ हस्तस्यैकपङ्क्त्या ॥ गङ्गा नृधूपधूपयन् ॥ अग्नौ जपदिव
सानि सप्तमस्तुमदिवस उदायी प्रजा कृत्वा सकल नाथि जपेत् ॥ ५ ॥ नैव नियतमागच्छति ॥ य
दिनागच्छति प्रियम् ॥ आहूय दीपि वदति ॥ साधक नवकृत्वा मन्त्रा कृत्वा विरुवस्वति ॥ अष्टादश
वाचा न्यासयति ॥ दीना वधार्थं प्रणिदिनैव ददाति ॥ निवर्त्तयत्येव यी कर्तव्यं ॥ यदि किञ्चिन्नापयति ॥
रुद्रानरुवति ॥ २ ॥ अथ कान्तकमहिसाधनं रुवति ॥ वटवृक्षं गत्वा मन्त्रमाप्तविधिना सन्वा

॥ मन्त्र ॥

॥ ॐ ॥

सपयन् ॥ आहूय रावयित्वा उक्त्वा नाथी दय ४ म हस्तमर्क जपेत् ॥ एवमस्तुमदिवस नाथी
साधयन् ॥ यावद्वैवा ५ म सर्वलोकान् विरुषिन्नाष्टादशपञ्चवान् मयमवागच्छति ॥ आगच्छका
मयि नवा राय्या रुवति ॥ द्वादश जना वक्रालं कान्तकामिकला जनेव ददाति ॥ प्रणिदिनै
व अष्टादिना वासु यच्छति ॥ ३ ॥ अथ कामध्वनी साधनं रुवति ॥ रुद्रपङ्क्त्या वासन
प्रणि कृतिमालिख्य नृकाकिनी यापनमात्रं अह्ना नमस्तु जपेत् ॥ मासान्क उदायी प्रजा

॥ ५५ ॥ कृत्वा घृण्य दीपान् जाल्पमो नो हत्वा जपेत् ॥ कृत्वा इदं वा ५ नियममागच्छति ॥ आगच्छ कामप्र
॥ ५५ ॥ दारुवति ॥ दिव्या लोका नैव क्षयने पायश्च य प्रलम् प्रगच्छति ॥ पत्रक्रिया रिगमदीवर्क्ये ॥
 अथ विनक्षति ॥ ४ ॥ ~~अथ विनक्षति साधने रुवति यट~~ विनापयित्वा किनकवधर्कसर्वा
 लोका नरुषिर्ना उत्पल हस्ती कुमानि जाति कुसुम न पूजयत् ॥ गुर्गान् धूपे दत्वा इदं वा ५ इष्ट
 सहस्रं जपेत् मास मर्क मासान् यथा विरुवत् ४ पूजा कृत्वा घृण्य दीप प्रजाल्पमा व ऊपे द्या ॥ **॥ ५५ ॥**

वरद्वं वा ५ स्वर्गमवागच्छति ॥ आगच्छ रुषी रावदा कामयित्वा ॥ नर्वं कार्या रुवति ॥ साधक
 स्पपनिजन निप्रतिपालयति दिव्य कामिक रुजनानी च ददाति ॥ अथ रुषी नावा न्य य रु
 ति ॥ ५ ॥ ~~अथ पद्मिनी साधने रुवति~~ ॥ स्वगृहं विरुक्ता न चन्दनं न मधु लकं कृत्वा गुर्ग
 न् धूपे दत्वा सहस्रं जपेत् मास मर्क मासान् यथा विरुवत् ४ पूजा कृत्वा नाव ऊपे द्या
 वरद्वं वा ५ नियममागच्छति ॥ आगच्छ कामयित्वा कार्या रुवति ४ विना वा कामप्रदा च सत्

॥ ५५ ॥

सायनसिद्धिद्वयवददाति ॥ ५ ॥ अथ नरिसाधने रुवति ॥ अथ कवृत्ता ॥ ५५ ॥ नैजापयत् ॥

॥ ५६ ॥

मान्साहवधपुष्पधूपगन्धैरुत्वा सुरुषं जपत् ॥ मान्साहवधनियममागच्छति ॥ अग्निसामाना
गिनी कर्थादासीं रूपं ४ यदि कार्या रुवति दिव्यवचसवसायने ददाति ॥ अश्वीना वासपु
ति ॥ यदि साकारुवति कामिक रुजनं वस्तु युगलं वददाति ॥ यदि रुगिनी रुवति ॥ योजनसहस्रं ॥ मव ॥
यमानोय ददाति ॥ वस्तु लंका व कामिक रुजनं वस्तु वसायने वददाति ॥ १ ॥ अथ नृवागिनी ॥ ५६ ॥

साधने रुवति ॥ कृत्वा नरु ऊपयत् ॥ यत्किं दीमातिरुवत् ४ प्रतिपदमात्रं पुष्पधूपविधिना द्वि
ध्वं जपत्मासमकं ॥ ५५ ॥ ४ पो र्धमा मासां यथा विरुवत् ४ पूजां कृत्वा घृत् प्रदिपं प्रजात्यं कलनाधि
जपत् ॥ प्ररुत् ॥ नियममागच्छति ॥ अग्निसामाना
किं वस्तु वसायने वददाति ॥ वर्षसहस्रांश्च जीवति ॥ ६ ॥ अथ नृवागिनी ॥ ५६ ॥
नविधि विरुवत् ४ ॥ ॥ अथ नृवागिनी ॥ ५६ ॥

॥ ५५ ॥ ति॥ अनेन का धमहि न न ज प र ॥ शं धै क ह २ अ म क य क्रि दी की श ज श ज श हं रु द ॥ अनेन का धमहि न
 ॥ ५६ ॥ न स ह र्ज ज प र छी घु मा ग रु ति ॥ यदि ना ग रु ति अ क्रि मूर्ति स्फु र ति न रु द ॥ सि य न ॥ अ शो म
 हान व र्क प ति कि ॥ ॥ अ थ जी ध बा ज मू डाल रु दी रु वे ति ॥ अ न्या न्य मूर्ति रु त्वा क नि रु
 द य व रु य रु ॥ रु र्ज नी द य प्र सा र्य कू र्क य रु र्वा म प्र ति रु ना जी धा रु द मू डाल ॥ अनेन मू डाल
 बा ड न रु लो क मा क र्ष य ति ॥ १ ॥ अ थ य क्रि दी मू डाल रु दी रु वे ति ॥ स म क च रु या नि ॥ ५७ ॥

रु त्वा म ध्य मां गु ल्या पू न च वि प लि नै ॥ अ ना मि का रु र्ज नी वा श त्व व रु द ॥ रु र्ज नी अ
 सि नि व रु क नि रु ग के स रु ति ना ॥ स र्व य क्रि दी नी प च मू डाल ॥ अ न या व रु मा ड या स र्व य रु
 दी मा ग रु ति ॥ अ न्या न्य मू ड या द क्रि दी गु रु ना वा ड नै ॥ शं की श आ ग रु २ य की दि ती
 घे पु न ना ग ष ण य स्वा हा ॥ २ ॥ अ न्या न्य मूर्ति रु त्वा म ध्य मां गु ल्या प्र सा च य रु ॥
 स र्व य क्रि दी नी अ रि मू र्खी क व ध मू डाल ॥ डी म हा य क्रि दी नी मे थू न प्रि य स्वा हा ॥ ३ ॥ अ न्या

॥ ५५ ॥ नमः शिवाय कनिष्ठाय प्रसाद्य कवेयं नमः सर्वयक्ति धीमान्निधकवटी मूडा ॥ ५६ ॥
 ॥ ५६ ॥ एवमेव नीलाहा ॥ ४ ॥ मन्त्रान्यहस्तैरवटका कावदास्याप्यसर्वयक्ति धीनी हृदयमूडा
 ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ हृदयमनु ॥ ५ ॥ मन्त्रान्यमूर्ति कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय
 ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ कृत्वा कर्तुमीमध्वमो प्रसाचयन् सर्वय

स्मिन्पर्वन्महोत्सवीवशधनस्यपादोसिन्माहिवन्दित्वास्वहृदयमृदाहृदक्ष। दृष्टमै
॥ अन्ननमस्वी॥ १ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ कर्कोटकमस्वी॥ २ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ पद्ममस्वी॥
३ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ महापद्ममस्वी॥ ४ ॥ दृष्ट॥ वामकीमस्वी॥ ५ ॥ दृष्टमै
दृष्टमैलामस्वी॥ ६ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ धूपमस्वी॥ ७ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ धीरवपालमस्वी
॥ ८ ॥ दृष्टमैदृष्ट॥ नागिनीसाधनेविधिविरुचिरुवकि॥ नागरुवनगत्वालद्वैजपत्सर्वमवा

॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

यश्चागमनिवक्तुं मम कार्या रुवति ॥ दिव्यं च न सा येनैव ददाति ॥ तिष्ठिद्वयादिव प्रयति सर्वा
 तापविपुत्रयनिना ईद ददाति ॥ २७ ॥ नागरुवने गत्वा ३ युग्मं जपेत् श्री घृणागकन्या आगच्छति ॥
 गताया ४० श्री घृणागमयी व्या कार्या रुवति ॥ दिनदि नृणां दीने ददाति ॥ दिव्यं काम रुजने ददाति ॥
 २ ॥ नागनागकन्यायासा निधं गत्वा ३ रुस रुसं जपेत् ॥ जपाने नागकन्या आगच्छति ॥
 दिव्यं कम्बुलेकाव रुजना दीने ददाति ॥ २८ ॥ अथ नागिनी समय मन्त्रादिरुवेति ॥ ओं हूं ३ आगच्छ ॥ ६९ ॥

॥ मन ॥

॥ ६९ ॥

नागिनी रु ४ ॥ आवाहन मन्त्र ४ ॥ ओं हूं रु ४ गन्धपुष्प मन्त्र ४ ॥ ओं हूं रु ४ आधुपा धो आरु रु ४ वा
 रु ४ ॥ सर्व नागिनी समय मन्त्र ४ ॥ रु ४ ग रु २ ॥ श्री पूनवागम धाम्य स्वा हा वि स र्ज न मन्त्र ४ ॥
 अथ मन्त्रादिरुवेति ॥ उक्ता व मन्त्रे लि कृत्वा उक्ताया १५ ॥ रु ४ लिख नाका व दया जपेत् ॥
 रु ४ नी नरवर्ग गता दारु गृह्णा न्मृगा नी गिनी समय मन्त्रा सर्व कृत्वा सर्व कर्तिका मावा ३ समय वि स र्ज न
 मन्त्रा ॥ वाम दक्षि १५ मन्त्रे कृत्वा पृथक् पृथक् निरुवय्य रुना कम्बु १५ मन्त्र लिख मान यत्ना गिनी

॥ ५१ ॥

समय मूडासर्व नागवर्ण कनी ॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

अथ वरुणाधिपति का धिपति का ॥ ५२ ॥

मिनी माकर्षय है ॥ ५३ ॥

मय पीदि कुमदा मा ॥ ५४ ॥

जाम वग जुवा ज नागिनी साधन विधि विस्त न न ॥ ५५ ॥

॥ मय ॥

॥ ५२ ॥

उत्ता यरुग वरु ॥ ५६ ॥

रा ॥ ५७ ॥

स्वा हा ॥ ५८ ॥

पदि नवी उपम ना ॥ ५९ ॥

उरु ना ॥ ६० ॥

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥

॥ ५५ ॥

॥ २५ ॥

॥ ५३ ॥

इह स्मार्कं लया रवस्विति ॥ पृष्ठमावाप्य देवला कमपिनयति ॥ दिव्यकामिकं लज्जनं च ददाति ॥

॥ अथ ~~अथ~~ धनं रवति ॥ पर्वमूलं विहाय वागत्वा ॥ युक्तं जपं कृपा नैस्वर्यं देवी कामलह
स्तनमादप्रचलगति ॥ श्रीधुं कविमया ला र्या रिवति ॥ अष्टो दीना नान्वक्तु युगलं ददाति ॥

॥ नदी कुलं गत्वा ॥ युक्तं जपं कृपा ॥ पुनश्च सकल चार्थं जपं स्रुगं नित्यं नमागच्छति ॥ आगता
या ला र्या रिवति ॥ दिनं दिनं पर्वो दीना चन्द ददाति ॥ ॥ नदी नदी संगमं गत्वा ॥ इदं सहस्रं

॥ मन ॥

॥ ५३ ॥

अथ ॥ ३ ॥

जपं कृपा नैस्वर्यं देवी कामलह
स्तनमादप्रचलगति ॥ श्रीधुं कविमया ला र्या रिवति ॥ अष्टो दीना नान्वक्तु युगलं ददाति ॥ ॥ अथ नदी
कुलं गत्वा ॥ युक्तं जपं कृपा ॥ पुनश्च सकल चार्थं जपं स्रुगं नित्यं नमागच्छति ॥ आगता
या ला र्या रिवति ॥ दिनं दिनं पर्वो दीना चन्द ददाति ॥ ॥ नदी नदी संगमं गत्वा ॥ इदं सहस्रं
जपं कृपा नैस्वर्यं देवी कामलह
स्तनमादप्रचलगति ॥ श्रीधुं कविमया ला र्या रिवति ॥ अष्टो दीना नान्वक्तु युगलं ददाति ॥ ॥ अथ नदी
कुलं गत्वा ॥ युक्तं जपं कृपा ॥ पुनश्च सकल चार्थं जपं स्रुगं नित्यं नमागच्छति ॥ आगता
या ला र्या रिवति ॥ दिनं दिनं पर्वो दीना चन्द ददाति ॥ ॥ नदी नदी संगमं गत्वा ॥ इदं सहस्रं

॥ ६८ ॥

वाचसुपाधुलं महादेवदेलाकानि जाना विष्ठापकिं कचसाधयीषामि ॥ अशोद वनान्मात्रयिषामि ॥
अथ नहं ध्यायामहादेव वरुं इमवाचसुपाधुलं गवत प्रमिहृत्तमनयेलायागिजानकसाधनसावि
धिविष्णुवमजामनुपदसमयसाधनं च ॥ अथ पर्वमधुलं महादेवस्य साधुकाचमदातु ॥ साधुसाधुमहा
देवानकं ॥ इह मनलापिमिति ॥ अथ खलु वरुं धनमहाकाधाधिपतिविदेवाचन ॥ अथ नहं प्रवक्ष्या
मिजाधमधुलमरुं चतुचक्रं चतुर्बाचनं चतुर्बाचनं चतुर्बाचनं ॥ अथ नहं प्रवक्ष्यामि ॥

॥ मन ॥
॥ ६९ ॥

महाकालासाताकुलादीर्घयुगाग्निसमप्ररुं ॥ रिन्नो जैनमहाकार्यकपाताकुलरूपदीर्घयुगा
समहालीमंशुलाकागिरुयकनं ॥ नहं मध्यमहावीडवज्रकाधीनिवधयतु ॥ रुगवनीदक्रि (सापा) धर्म
हादेवसमालिखतु ॥ अथाकधवलर्कलाचलाकीचपाधुलं ॥ अथ नहं चतुर्बाचनं चतुर्बाचनं चतुर्बाचनं
॥ चापठाकि धर्मयुक्तं वरुं सनसमाधिने ॥ रुगवनीवामपा (धर्म) नाचायनं ससालिखतु ॥ धर्ममरुं
निरुदहं ॥ चतुर्बाचनं विनाजिनं ॥ चामलहससंयुक्तं धीखचक्रगठापर्व ॥ गवतानमाचुर्बाचनं

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

इयं निम्बिर्गुरुत्वा सिद्धिः समस्त देवसाधने ॥ हेव ऊरु ॥ एवमुच्चा निरुमायुः सर्वदेवचरिषु
ति ॥ अथ वक्रा रूपा धिरुवन्ति ॥ प्रक्षालि रूपा दाना वक्रमन्त्रा ल्य हं कृति ॥ नाथय सर्वदेवानां
वक्रपा धि वचो यथा ॥ अस्मन्नाय किं ही नागिनी रू रू तिनी महर्षि का ॥ कृष्णा ॥ दधनि वक्रा
रूपसूर्या जिता ॥ अं वक्रा फलमहाश्री धरुन दह पचमानय हं २ रू ॥ अथ रूच सर्वदेवमा
न धक्रया धिरुवन्ति ॥ हं ३ रू ॥ अतनापि प्रया एतन्धुर्वक्ष विधीर्यन ॥ न न ४ भिष्य प्रवक्ष ॥

॥ मव ॥

॥ ५६ ॥

यक्षाधमः ड्याकचयित्वानेनमकुं धावकायगु ॥ अं प्रविशकोध हं ३ आ ४ काला माला कूलरीषण
वक्रा ॥ अतना वाचि न मायुः धावाश्चाव धानक दनपातन सप्तमार्थ रुवन्ति ॥ ॥ अथ रू
न जामवम रान कुवा ऊ को धम सुल विधिविल वा रुवन्ति ॥ अं रू ४ श्री सिं ह ध्वज धा बी दी की ४
॥ को धस्य पूवक ॥ अं हं हं हं महापद्मावनी धमूर्वा धा बी दी हं ॥ एष्ट ४ अं विरुति जू कृष्ण
धा विदी हं ज ४ दकि धन ४ ॥ अं हं रू ४ सूव हा विदी चिनाम धि ध्वज धा बी धि हं ॥ वाम न ४ ॥ अं

॥ हूँ ॥ अथ साधनविधिविस्तारवर्णि॥ हूँ हूँ ओं ओं ज॥ अथ नाजिगाथाओं हूँ ज॥ अजिगाथाओं हूँ ज॥
॥ ५७ ॥ पूवदा॥ ओं हूँ ज॥ आपूवदा॥ ओं हूँ ज॥ अथ नाधिपति॥ ओं हूँ ज॥ कुलध॥ ओं हूँ ज॥ हूँ
 ठा॥ ओं आ॥ हूँ ज॥ किंकरी॥ हूँ ज॥ अथ नाधिपति॥ ओं हूँ ज॥ अथ नाधिपति॥ ओं हूँ ज॥
 धनेरुवर्णि॥ श्रीवर्णधनस्य पूवनालकैजप॥ पूर्वसंवाहनारुवर्णि॥ नरुपूर्वमासीउदाचीपूजीकृ **॥ मन ॥**
 त्वा॥ नरुकरुकरुधुगुपायसकीवषायसर्प॥ कर्पूजय॥ गृग्वधूपदत्वास्तकलवाधिजप॥ **॥ ५८ ॥**

यत्नानियतमागच्छति॥ यदिवागच्छति॥ अथ नाधिपति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ति॥ साधकं नवकवीदि॥ ॥ अथ नाधिपति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ददाति॥ सर्वशुविग्रहं कर्तव्यमि॥ अथ नाधिपति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ति॥ सफकल्यानूजीवति॥ १ ॥ अथ नाधिपति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 जप॥ दिवसानि सफ॥ सफनदिवस॥ उदाचीपूजाकृत्वा यथावलिदानं बर्गवधूपदत्वा जप॥

॥रु॥

॥उ॥

ऊपा नानियरुमाग कृति ॥ हा साध क किं मया करुवी ॥ साध केन व कं यो यनि ॥ दिव्य कामि क हा ज
ददाति प्रमिदिने नैव के वस्तु युगल ददाति ॥ प के दिना नो प्रय कृति यं च वर्ष ॥ कानि जीव यनि ॥
४ ॥ अथ ठी ॥ नाधि पमि साधने रुवति ॥ नाडी ॥ म ॥ नै गत्वा ॥ २२ स रु मुं ज प दिव सा नि स फ २ स फ
म दिव स प्र रु ती म त्म मा स म्नु ठि का ल रु क द धि गू ड धू प रु ली रु ली का य ॥ थ कं ज प गू गू गू नू धू
पे द त्वा ऊ प द रु ना प्रे या व रु ती ॥ २२ ना ड हा हा का न २ २ य न ॥ न नी न रु रु वी स ग रा प वि वा न ॥

॥म॥

॥उ॥

प वि रु ती आ ग कृति ॥ आ ग ना य व लि द द्या न रु २ व ति ॥ सर्व रु रु किं क ना रु व ति दि न दि न वा खो दी
ना ना त्म य कृति ॥ सर्व ॥ अ प्र म द्या क य नि ॥ वर्ष स रु मुं जि व य नि ॥ ५ ॥ अथ रु ली ॥ च सा ध ने रु व ति ॥
द वा य रु न ग त्वा च रु ग न्ध रु रु रु स म्गू र्गू नू धू पे द त्वा ॥ २२ रुं ज य त्पू र्व स वा रु मा रु व ति ॥ ना डी रु रु
च रु र्द ॥ म त्म मा स म्नु ठि का न रु रु कं य था वि धि ना व लि द प य रु ॥ रु रु धू पे द त्वा ऊ प
या व द रु ना डी रु ती म हा क लि रु ती ष ॥ कृ ति ना ग कृति ॥ रु ती या व रु पी ली क न क मी दि क ना मि

॥ ६८ ॥ प्रहृष्टिकिं कर्माधिकारानि ॥ दिव्यकामिकरुज्जनं वददति ॥ पृष्ठमावाप्य स्वर्गमपिनयति ॥ पुन
 ॥ ७१ ॥ वापि नाशं ददाति ॥ पंचैव वर्षं सहस्रादिजीवयेति ॥ ॥ इति श्री कृष्ण उग्रमन्त्रसहस्रनाम
 किं कचसाधनविधिविस्तृतं ॥ ॥ अथ कर्माधिकारप्रवक्ष्यामि नानासिद्धिप्रसाधनं ॥ आचार्या
 नीहिगार्थययथा कर्माधिकारं वदति ॥ नमो यन्मानुषं देवमालंघय पापकाविदो ॥ मृषावादादिक्
 भीलाश्च दनिद्रागपीठिताः ॥ स्वल्पापुष्पलविक्राधनकुर्यात्मानुषैर्लज्जं ॥ हाहा स्वल्परुदामप

॥ मच ॥
 ॥ ७१ ॥

नापदिहागधनेयधामनसायदासिद्धिमन्त्राय देवना ऊं सिद्धि ॥ किं पुनमानुष्यनाजानीनि धनानि
 कथं वच ॥ देवकन्यापिसिद्धिर्लोककृष्णमात्रकैः ॥ पठितासिद्धिमन्त्राय धीयुसिद्धियथास्वरूपं ॥ अ
 मृतकहीनवीर्याधीसर्वसुखसम्पदा ॥ चतुर्वर्गमहागुरुसिद्धिर्मेपददाय ॥ सकृत्पठितमात्रं दसिद्धि
 कनाप्रसं ॥ ॥ अथ कर्माधिकारप्रवक्ष्यामि नानासिद्धिप्रसाधनं ॥ आचार्या
 अथ कर्माधिकारप्रवक्ष्यामि नानासिद्धिप्रसाधनं ॥ आचार्या

॥ १ ॥ लो प्रसार्य ध्याय च ध्याय य ह ॥ अप वाजिताम हारुत वाजस्य मूडा ॥ १ ॥ अस्या नवम द्याम
 ॥ २ ॥ ध्याय ॥ लो प्रव ध्याय नृ नी प्रसार्य कृ के य ह ॥ अजितस्य मूडा ॥ २ ॥ अस्या नवम द्याम नृ नी
 कृ के लि कृत्वा कनि श्री प्रसार्य पृथ कृथ कृ पूव धस्य मूडा ॥ ३ ॥ अस्या नवम द्याम नृ नी
 कृ व कृ ॥ अप धस्य मूडा ॥ ४ ॥ अस्या नवम द्याम कनि द्वि की धृ वि कृत्वा ॥ ध्याय नाधि ॥ मव ॥
 पृथ मूडा ॥ ५ ॥ अस्या नवम द्याम अरु शे पा ध्याय नृ नी हारुत धस्य मूडा ॥ ६ ॥ अस्या नवम द्याम ॥ १ ॥ २ ॥

या ई हारुत शे म ध्याय प्रव ध्याय कनि द्वि की प्रसार्य पृथ कृथ कृ या जय ह ॥ कृ लि धस्य मूडा ॥
 ॥ १ ॥ सी पू प के लि कृत्वा नृ नी ध्याय कृ व य ह ॥ ॥ वि कृ वा हूम मूडा ॥ २ ॥ ध्यायि श्री
 हारुत मव महान कृ वा ज ॥ हारुत मव महान मू डाल कृ धा समार्प ॥ ॥ अथ नवम द्याम ध्यायि श्री
 धि पा नृ नृ ग व नृ म नृ वी च ह ॥ वजा वा र्या हि नार्थ य उग्र हारुत य कसा धर्त ॥ ध्याय नृ ना म हारुत
 ना वजा वा र्य धा ध्याय ह ॥ अस्या न्या म हारुत नी मात नृ जा प म हारुत ॥ अथागा हारुत मव महान कृ

